Click on the
Download Link
To view the complete book

भारतीय कला का परिचय

भाग 2

कक्षा 12 के लिए
ललित कला की पाठ्यपुस्तक

12148

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

Prelims.indd 1 25 February 2022 03:10:18

12148 – भारतीय कला का परिचय, भाग 2

कक्षा 12 के लिए ललित कला की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-91444-94-5

प्रथम संस्करण

मार्च 2022 फाल्गुन 1943

PD 40T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2022

₹ 115.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा निखिल ऑफ़सेट, 223, 127, डी.एस.आई.डी.सी. कॉम्प्लेक्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-I, नयी दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी., प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — Phone : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 — Phone : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — Phone : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 — Phone : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 — Phone : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*विपिन दिवान*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
उत्पादन सहायक	:	*प्रकाश वीर सिंह*

आवरण एवं सज्जा

रितू टोपा

© NCERT not to be republished

Prelims.indd 2 22 March 2022 09:47:56

-------- Click on the --------
Download Link
To view the complete book

आमुख

भारत में विद्यालयी शिक्षा के लिए उत्तरदायी होने के कारण राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा कला संबंधी विषयों के पाठ्यक्रम को विकसित करने की पहल विभिन्न उच्च माध्यमिक कक्षाओ में प्रमुखता से की गई है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के अस्तित्व में आने के बाद पाठ्यपुस्तकों के विकास, उनकी प्रस्तुति, अंतःविषय दृष्टिकोण, अभ्यास के प्रकार आदि में परिवर्तन किए गए हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी विद्यार्थियों की शिक्षा और अधिक लचीली बनाने पर ज़ोर देती है। नीति माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को विषय चयन के उपयुक्त व विस्तृत विकल्प प्रस्तुत करती है। इसमें कला से संबंधित विषय भी शामिल हैं। जिससे विद्यार्थी शैक्षिक पथ एवं स्वयं की जीवन योजनाओं की रूपरेखा बना सकें। इसलिए उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, जो कि विद्यालय छोड़ने की अवस्था भी होती है, उस परिस्थिति में उनके पास उच्च शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के वृहत् क्षेत्रों के विकल्प होंगे।

शिक्षा के इस स्तर पर इस बात पर ज़ोर दिया जा रहा है कि माध्यमिक स्तर पर दृश्य एवं ललित कला को केवल एक विषय के रूप में न समझा जाए, बल्कि अब उसे व्यावसायिक शिक्षा के रूप में भी देखा जाए। ललित कला में सीखने के उद्देश्य प्रारंभिक शिक्षा में केवल अभिव्यक्ति तक सीमित थे, लेकिन आज यह कौशल को परिपूर्णता व संरचना (डिज़ाइन) में दृष्टिकोण विकसित करने पर बल देते हैं। विद्यार्थियों को उनकी अपनी भाषा और माध्यम में स्वयं की अभिव्यक्ति पर बल दिया गया है। साथ ही, कला के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को भारत और दुनिया के विस्तीर्ण संदर्भ में विकसित करने की आवश्यकता है। कला इतिहास शिक्षा का एक प्रमुख क्षेत्र है, जो कला के अध्ययन का एक अंग या विषय भी है। जिससे विद्यार्थी देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

यह देखा गया है कि कई शिक्षा बोर्ड दृश्य या ललित कला को वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर एक वैकल्पिक विषय के रूप में प्रदान करते हैं, जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, व्यावसायिक कला शामिल हैं। इनकी समीक्षा की गई और एक नए पाठ्यक्रम का गठन किया गया। यह विषय वैकल्पिक या व्यावहारिक घटक से अलग कला सिद्धांत की चर्चा करता है, जो विद्यार्थियों को देश की कला और वास्तुकला की विविध ऐतिहासिक विरासत से परिचित करवाता है। ललित कला की इस पाठ्यपुस्तक को कक्षा 12 के लिए विकसित किया गया है।

© NCERT not to be republished

Prelims.indd 3 25 February 2022 03:10:19

हमारा प्रयास भारतीय कला इतिहास के व्यापक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करना है और इसे कालानुक्रमिक के अनुरूप और समसामयिक निरंतरता में रखना है। एक संगठन के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. प्रणालीगत सुधार और अपने प्रकाशनों या उत्पादों की गुणवत्ता में निरंतर विकास के लिए प्रतिबद्ध है। पाठ्यपुस्तक को संवर्धित करने हेतु परिषद् टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत करती है।

हृषिकेश सेनापति
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
अगस्त 2020

© NCERT not to be republished

-------- Click on the --------
Download Link
To view the complete book

Prelims.indd 4 25 February 2022 03:10:19

प्राक्कथन

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के दौरान, भारतीय विद्वानों के सहयोग से कुछ ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने भारत के अतीत का अध्ययन करने में सक्रिय रुचि ली। इसके साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप में स्थापत्य स्मारकों, मूर्तियों और चित्रों का एक सुव्यवस्थित या क्रमवार अध्ययन शुरू हुआ। धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन के साथ, धर्म के इतिहास का अध्ययन भी किया गया और मूर्तियों और चित्रों की पहचान शुरू की गई, जो प्रारंभिक छात्रवृत्ति का एक प्रमुख क्षेत्र बन गया।

जैसे-जैसे कला इतिहास का अध्ययन दस्तावेज़ और उत्खनन के द्वारा व्यापक होता गया, कला वस्तुओं का वर्णन अध्ययन की एक प्रमुख विधि के रूप में विकसित हुआ। बीसवीं सदी के प्रारंभ में कुछ प्रमुख अध्ययन हुए जो कला के मात्र विवरण से परे थे। तत्पश्चात् भारतीय कला इतिहास के पश्चिमी और भारतीय विद्वानों की कई पीढ़ियों ने विषय का गहराई से अध्ययन किया है, जो हमें स्थापत्य स्मारकों, मूर्तियों और चित्रों में परिलक्षित भारतीय सभ्यता के शानदार अतीत का एहसास कराती है। भारतीय दृष्टिकोण में भवन निर्माण, मूर्तिकला और चित्रकला एक ओर यूरोपीय कला से और दूसरी ओर सुदूर पूर्वी कला से भिन्न व विशिष्ट है। इसलिए, भारतीय कला का ऐतिहासिक अध्ययन, विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में प्रतिष्ठित शैक्षणिक पाठ्यक्रम बनकर उभरा है।

प्राय: कला वस्तुओं का अध्ययन दो महत्वपूर्ण तत्त्वों पर आधारित होता है— रूपात्मक या शैलीगत विश्लेषण और सामग्री एवं प्रासंगिक अध्ययन। पहली श्रेणी में वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रों की विशेषताओं का रूपात्मक अध्ययन शामिल है, जबकि दूसरी सामग्री विश्लेषण पर केंद्रित है, जिसमें कई घटक या अंग हैं, जैसे कि प्रतिमान-लक्षण (आइकनोग्राफ़िक) का अध्ययन, आख्यान तथा सांकेतिकता (सेमीक्यूटिक्स) आदि।

कक्षा 11 और 12 के लिए पाठ्यपुस्तकों की इस शृंखला में, कक्षा 11 की पाठ्यपुस्तक शुरुआत से मध्ययुगीन काल तक के विभिन्न दृश्य कला रूपों का परिचय देती है, जैसे— भित्ति चित्र, चित्रकला, मूर्तियाँ, वास्तुकला आदि। कक्षा 12 की इस पाठ्यपुस्तक में मध्ययुगीन और आधुनिक काल के दौरान भारत में चित्रकला परंपराओं के विकास पर अध्याय शामिल हैं।

उच्चतर माध्यमिक स्तर की युवा पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कला में विकास की समझ विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक कुछ उदाहरणों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है।

इस पाठ्यपुस्तक में आठ अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय एक विशेष शैली या चित्रकला के समयकाल और अन्य दृश्य कलाओं की चर्चा से संबंधित है। पहला अध्याय पश्चिमी और पूर्वी भारत में ताड़ के पत्ते की पांडुलिपि चित्रकला के बारे में बात करता है, जो परवर्ती विभिन्न चित्रकला स्कूलों के विकास की पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करता है। दूसरा अध्याय 'राजस्थानी चित्रकला शैली' से संबंधित है। राजस्थानी चित्रों की प्रत्येक शैली एक राजपूत राजा के एक अलग दरबार से संबंधित है और इसकी संरचना, रंग, संदर्भ और मानवाकृतियों का चित्रण,

© NCERT not to be republished

Prelims.indd 5 04 March 2022 09:40:07